P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-8* November- 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

प्राथमिक स्तर पर कार्यरत् शिक्षक एवं शिक्षामित्रों की व्यावसायिक संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन

पटेल सुशीला देवी
शोध छात्रा,
शिक्षाशास्त्र विभाग,
सिंघानिया विश्वविद्यालय,
पचेरी बड़ी, झुंझुंनू, राजस्थान

प्रमोद कुमार बाजपेयी
विभागाध्यक्ष,
शिक्षाशास्त्र विभाग,
दयानन्द बछरावाँ पी0जी0 कॉलेज, बछरावाँ,
रायबरेली, उ0प्र0

सारांश

शिक्षा के क्षेत्र में परिवर्तन लाने के लिए शिक्षक की भूमिका महत्वपूर्ण है क्योंकि एक विज्ञ शिक्षक ही शिक्षण व्यवस्था की सकारात्मक दिशा में परिवर्तन ला सकता है इसलिए शिक्षक से जुड़े हुए सभी कारक शिक्षा व्यवस्था को प्रभावित करते हैं। व्यावसायिक संतुष्टि शिक्षक की मनोदशा को दर्शाती है जो उसे कार्य से जुड़ने अथवा कार्य से विमुख होने की ओर ले जाती है। इसलिए शिक्षण व्यवस्था के उत्थान के लिए शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि स्तर का उच्च होना परमावश्यक है। प्रस्तुत शोध अध्ययन के निष्कर्ष में यह पाया गया कि प्राथमिक स्तर पर कार्यरत् शिक्षक एवं शिक्षामित्रों की व्यावसायिक संतुष्टि अलग'–अलग है अर्थात् शिक्षक एवं शिक्षामित्र दोनों की व्यावसायिक संतुष्टि का स्तर अलग–अलग है। एकतरफ शिक्षक यदि अपने शिक्षण व्यवसाय के प्रति संतुष्टि का अनुभव करते हैं वहीं दूसरी ओर शिक्षामित्र शिक्षकों के समान वेतन न मिलने के कारण व्यावसायिक असंतोष को दर्शाते हैं। आज देश की समस्त शिक्षणदायी संस्थाओं को अथवा सरकार यह चाहिए कि शिक्षा से जुड़े शिक्षक एवं शिक्षामित्र दोनों की व्यावसायिक संतुष्टि को उच्च रखने हेतु भागीरथी प्रयास किए जाए जिससे व्यवस्था में परिवर्तन आ सके।

मुख्य शब्द : व्यावसायिक संतुष्टि, प्राथमिक शिक्षा।

प्रस्तावना

शिक्षा बालक के जन्म से लेकर मृत्यु तक अनवरत् चलने वाली वह प्रक्रिया है जिसके अभाव में व्यक्ति, समाज अथवा राष्ट्र का विकास सम्भव नहीं है। किसी भी समाज अथवा व्यक्ति में यदि परिवर्तन दिखता है तो निश्चित रूप से वह शिक्षा का प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष परिणाम होता है। आदिकाल से लेकर आज तक लगभग सभी विद्वतजनों का यह मानना है कि यदि व्यक्ति अथवा समाज या फिर राष्ट्र में सकारात्मक परिवर्तन लाना है तो उसकी शिक्षा को बदलना होगा क्योंकि इसके अभाव में किसी भी क्षेत्र में परिवर्तन लाना असम्भव नहीं, तो कठिन अवश्य है।

शिक्षा के क्षेत्र में परिवर्तन लाने के लिए शिक्षक की भूमिका महत्वपूर्ण है क्योंकि एक विज्ञ शिक्षक ही शिक्षण व्यवस्था की सकारात्मक दिशा में परिवर्तन ला सकता है इसलिए शिक्षक से जुड़े हुए सभी कारक शिक्षा व्यवस्था को प्रभावित करते हैं। व्यावसायिक संतुष्टि शिक्षक की मनोदशा को दर्शाती है जो उसे कार्य से जुड़ने अथवा कार्य से विमुख होने की ओर ले जाती है। इसलिए शिक्षण व्यवस्था के उत्थान के लिए शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि स्तर का उच्च होना परमावश्यक है। आमतौर पर देखा गया है कि जिन शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि निम्न होती है वे शिक्षक शिक्षण व्यवस्था में अपना योगदान तुलनात्मक रूप से कम दे पाते हैं जबकि इसके विपरीत उनका योगदान अधिक देखा गया है। आज देश के समस्त शिक्षणदायी संस्थाओं को अथवा सरकार को यह चाहिए कि शिक्षा से जुड़े शिक्षक एवं शिक्षामित्रों दोनों की व्यावसायिक संतुष्टि को उच्च रखने हेतु भागीरथी प्रयास किए जाएँ जिससे व्यवस्था में परिवर्तन आ सके।

शिक्षा में व्यावसायिक संतुष्टि के पीछे शिक्षकों कि वह मनोदशा शामिल है जो उन्हें अपनी कृति के पारिश्रमिक के रूप में या फिर सरकार द्वारा मिलने वाली सुख–सुविधाओं के रूप में देखा जाता है क्योंकि व्यावसायिक संतुष्टि का सीधा सम्बन्ध शिक्षक एवं शिक्षामित्रों के उस वेतनमान से है जो उन्हें वर्तमान समय में मिल रहा है। शोधार्थिनी प्रस्तुत शोधपत्र के माध्यम से यह जानने का प्रयास कर रही है कि शिक्षक एवं शिक्षामित्रों की व्यावसायिक संतुष्टि एक जैसी

है अथवा अलग–अलग उनकी व्यावसायिक संतुष्टि पर इसका किस प्रकार प्रभाव पड़ रहा है आदि प्रश्नों के उत्तर इस सोच का पटाक्षेप करेंगे कि शिक्षक एवं शिक्षामित्रों को मिलने वाले वेतनमान का सीधा सम्बन्ध उनकी संतुष्टि से है अथवा नहीं।

आवश्यकता एवं महत्व

वर्तमान समय में समाज में ऐसी विचारधारा देखी जा सकती है कि अधिक वेतनमान पाने वाले शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि अधिक जबकि कम वेतनमान पाने वाले शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि कम होती है। उक्त विचारधारा में कितनी सत्यता है, विचारधारा को प्रभावित करने वाले कौन–कौन से कारक हैं। इन सभी विषयों को विस्तार से समझने के लिए शोधार्थिनी ने इस विषय विशेष पर शोधकार्य करना आवश्यक एवं महत्वपूर्ण माना है।

अध्ययन का औचित्य

यह आमधारणा समाज के हर वर्ग में देखने को मिलती है कि अधिक वेतनमान अधिक व्यावसायिक संतुष्टि। परन्तु आज भी प्राथमिक शिक्षा से जुड़े हुए लोग जो इसे व्यवसाय अथवा वृत्त ना मानकर इसे समाज सेवा की दृष्टि से देखते हैं ऐसे विद्वतजनों को जानने के लिए शोधार्थिनी ने उक्त विषय का चयन किया है साथ ही उक्त धारणा को समझना आवश्यक मानती है यद्यपि इस क्षेत्र में बहुत सारे शोधकर्ताओं ने शोधकार्य किया और परिणाम भी प्राप्त किया है परन्तु किसी ने भी दो ऐसे चरों के मध्य अन्तर जानने का प्रयास नहीं किया है जो एक दूसरे में चयन और वेतनमान दोनों में भिन्न हैं इसीलिए यह विषय शोध के लिए काफी व्यवहारपरक बन जाता है यही इस शोधपत्र का औचित्य है।

समस्या कथन

प्राथमिक स्तर पर कार्यरत् शिक्षक एवं शिक्षामित्रों की व्यावसायिक संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन।

अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध अध्ययन में निम्न उद्देश्यों का अध्ययन किया गया है–

1. प्राथमिक स्तर पर कार्यरत् शिक्षक एवं शिक्षामित्रों की व्यावसायिक संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. प्राथमिक स्तर पर कार्यरत् महिला शिक्षक एवं शिक्षामित्रों की व्यावसायिक संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. प्राथमिक स्तर पर कार्यरत् पुरुष शिक्षक एवं शिक्षामित्रों की व्यावसायिक संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ

उद्देश्यों की पूर्ति हेतु निम्नलिखित परिकल्पनाओं का परीक्षण किया गया है–

1. प्राथमिक स्तर पर कार्यरत् शिक्षक एवं शिक्षामित्रों की व्यावसायिक संतुष्टि के मध्यमानों के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. प्राथमिक स्तर पर कार्यरत् महिला शिक्षक एवं शिक्षामित्रों की व्यावसायिक संतुष्टि के मध्यमानों के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. प्राथमिक स्तर पर कार्यरत् पुरूष शिक्षक एवं शिक्षामित्रों की व्यावसायिक संतुष्टि के मध्यमानों के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सीमांकन

प्रस्तुत शोध अध्ययन प्राथमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षक, शिक्षिका तथा शिक्षामित्रों की व्यावसायिक संतुष्टि पर किया गया है जिसमें 100 शिक्षक, 100 शिक्षिका तथा 100 शिक्षामित्रों का चयन सामान्य यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया है यह न्यादर्श रायबरेली जनपद के ग्रामीण एवं शहरी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षक, शिक्षिका तथा शिक्षामित्रों की व्यावसायिक संतुष्टि को जानने हेतु किया गया है।

साहित्यावलोकन

Srivastava, Shobha (1986): "A Study of Job Satisfaction and Professional Honesty of Primary School Teachers with Necessary Suggestions." (Ph.D. Edu., Avadh University)

उद्देश्य

1. प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि और व्यवसायिक ईमानदारी (Professional honesty) का अध्ययन करना।
2. प्राथमिक शिक्षा को उचित रचनात्मक वातावरण देने के लिये सुझावों का अध्ययन करना।

न्यादर्श व उपकरण

अध्ययन के लिये न्यादर्श के रूप में 100 शैक्षिक विशेषज्ञ विश्वविद्यालयों/कालेजों के शिक्षकों, प्रशासनिक सदस्यों तथा 987 (महिलायें तथा पुरुष) प्राथमिक शिक्षकों का चयन यादृच्छिक विधि से प्राथमिक विद्यालयों की जनसंख्या के आधार पर विभिन्न जिलों – फैजाबाद, गोण्डा, बहराइच, बाराबंकी, सुल्तानपुर और प्रतापगढ़ आदि से किया गया, जिनमें शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों के विद्यालय थे। प्रस्तुत अध्ययन में प्रदत्तों के संकलन के लिये निम्न उपकरणों का प्रयोग किया गया था–

1. A Job Satisfaction Inventory
2. Professional Honesty Preference Records
3. व्यावसायिक असंतुष्टि के कारण के लिये एक प्रश्नावली
4. प्राथमिक शिक्षकों में व्यावसायिक ईमानदारी के कारकों को जानने के लिये एक 'चेक लिस्ट' (Check-list) का निर्माण किया गया।

मुख्य निष्कर्ष

1. प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों में व्यावसायिक संतुष्टि तथा व्यवसाय के प्रति ईमानदारी विशेष रूप से देखी गई।
2. शिक्षिकाओं में शिक्षकों की अपेक्षा, अविवाहित शिक्षकों में विवाहित शिक्षकों की अपेक्षा, ग्रामीण शिक्षकों में शहरी शिक्षकों की अपेक्षा, व्यावसायिक पृष्ठभूमि वाले शिक्षकों में अधिक व्यावसायिक संतुष्टि और व्यावसायिक ईमानदारी पाई गयी।
3. प्रौढ़ शिक्षकों की तुलना में नवयुवक शिक्षकों में, पद में छोटे शिक्षकों की तुलना में पद में बड़े शिक्षकों में और उच्च शैक्षिक उपलब्धि वाले शिक्षकों की तुलना में निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले शिक्षकों में अपने

व्यवसाय के प्रति उच्च व्यावसायिक संतुष्टि पायी गई।

4. प्राथमिक शिक्षकों में व्यावसायिक असंतुष्टि के मुख्य कारण थे – अनुचित वेतन, भौतिक सुविधाओं (जैसे स्थान, उपकरण आदि), मिलने वाले क्षेत्र में समस्यायें तथा अधिकारियों के अनुचित आदेश आदि।
5. प्राथमिक शिक्षकों में व्यावसायिक ईमानदारी मुख्य कारकों के कारण थी – शिक्षकों के चरित्र का मजबूत और अच्छा होना, शिक्षकों में कार्य के प्रति संवेदनशील होना, शिक्षकों के अच्छे कार्य की सराहना किया जाना, विद्यालय में खुले और स्वस्थ्य वातावरण का होना, शिक्षकों का अच्छा मानसिक स्वास्थ्य पाया जाना था।

Reddy, Balakrishna (1989): "Job Satisfaction of Primary School Teachers" (M.Phil. Edu., Shri Venkateswara University)

उद्देश्य

1. प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों का शिक्षण के प्रति दृष्टिकोंण तथा व्यावसायिक सहभागिता के सम्बन्ध में व्यावसायिक संतुष्टि के स्तर का निर्धारण करना।
2. शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि तथा असंतुष्टि को निर्धारित करने वाले विभिन्न प्रकार के व्यावसायिक कारकों का अध्ययन करना।
3. उन शिक्षकों की प्रतिशतता का ज्ञान करना जो अपने कार्य अर्थात् अध्यापन कार्य में मनोवैज्ञानिक रूप से अच्छी तरह शामिल हैं।
4. व्यावसायिक संतुष्टि, शिक्षकों के शैक्षिक दृष्टिकोंण तथा व्यावसायिक सहभागिता के सम्बन्ध में बहुउद्देश्यीय पिछड़ेपन के समीकरण का पता लगाना।

न्यादर्श व उपकरण

अध्ययन में न्यादर्श के रूप में विभिन्न स्तरों में कार्यरत 300 प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों का चयन यादृच्छिक विधि से किया गया। प्रदत्तों के संकलन के लिये निम्न उपकरणों का प्रयोग किया गया था–

1. A Job Satisfaction Scale
2. A Scale to Measure Attitude Towards Teaching
3. A Job Involvement Scale
4. 16 Personality Factors Questionnaire
5. शोधकर्ता द्वारा स्वयं निर्मित डाटा सीट

अबिद (2007) ने रियाद शहर के सरकारी स्कूलों में कार्यरत 472 पुरूष शिक्षकों के विषय जनसांख्यिकीय और कार्यचर तथा व्यावसायिक तनाव के बीच सम्बन्ध का आकलन किया। इन्होनें बहुत प्रतिगमन का प्रयोग किया जिसमें प्रथम के अन्तर्गत यह निष्कर्ष निकाला कि जनसांख्यिकीय चर और व्यावसायिक तनाव के मध्य नाकारात्मक सम्बन्ध था। द्वितीय के अन्तर्गत कार्यचर और व्यावसायिक संतुष्टि के मध्य धनात्मक सम्बन्ध था जबकि जन सांख्यिकीय चर की तुलना में अधिक तनाव को प्रभावित करता था।

रेजे व अन्य (2008) ने ईरान के कृषि विद्यालय के शिक्षकों (जिनका अनुभव एक वर्ष था) का रोजगार सन्तुष्टि का मापन करने के लिए एक अध्ययन किया। उन्होने पाया कि 56.07 प्रतिशत कृषि शिक्षक अपने रोजगार से मध्यम स्तर पर संतुष्ट थे, 33.3 प्रतिशत शिक्षक कम संतुष्ट तथा 10 प्रतिशत शिक्षक अपने रोजगार से अधिक संतुष्ट थे। उन्होनें पूर्व का विश्लेषण करके बताया कि शिक्षा का स्तर, पढ़ाये जाने वाले विद्यार्थियों की संख्या, कक्षा का समय (प्रतिदिन), शिक्षक–छात्र अनुपात कुछ ऐसे कारक है जिसमें परिवर्तन करके कृषि शिक्षकों की रोजगार सन्तुष्टि में वृद्धि की जा सकती है।

एहसान एवं अन्य (2009) ने कार्य सन्तुष्टि एवं कार्य दबाव का सम्बन्ध जानने के लिए एक अध्ययन किया। कार्य दबाव को निर्धारित करने वाले कारकों में प्रबन्ध तंत्र, कार्य, गृह कार्य, निष्पादन इत्यादि के दबाव को सम्मिलित किया गया। प्रतिदर्श के रूप में मलेशिया के सरकारी विद्यालय को लिया। उन्होने पाया कि कार्य सन्तुष्टि एवं कार्य दबाव के मध्य घनिष्ट सम्बन्ध है।

भगत नीलम (2014–15) : माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के तनाव का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव।

माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों के विद्यार्थियों के तनाव का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

तनाव में वृद्धि के साथ शैक्षिक उपलब्धि घटती या बढ़ती है लेकिन तनाव शैक्षिक उपलब्धि को अत्यन्त निम्न स्तर तक ही प्रभावित करता है।

उपयुक्त अनुसंधानों से स्पष्ट है कि शिक्षा जगत के विभिन्न कारणों को ध्यान में रखते हुए इसका स्तर उन्नत करने के लगातार प्रयास किये जा रहे हैं यह प्रयास अभी तक जारी है।

पी0एच0डी0 स्तर तक जनपद रायबरेली के संदर्भ में इस महत्वपूर्ण विषय का कोई कार्य नही किया गया है अतः इस विषय को चुनने तथा इस विषय पर कार्य करने की आवश्यकता स्पष्ट है अतः प्रस्तुत शोधकार्य पी0एच0डी0 स्तर पर पूर्वतः नवीन व मौलिक है।
वहाँ के पुरुष एवं महिला प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभाविकता और आत्म अवधारणा के मध्य महत्वपूर्ण सम्बन्ध था।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत् सर्वेक्षण विधि को अपनाया गया है। जिसमें वर्तमान क्रिया की सार्थकता सिद्ध करने या वर्तमान क्रिया में सुधार करने के लिए वर्तमान दशा से सम्बन्धित आंकड़े एकत्रित किए जाते हैं।

शोध उपकरण

शोधार्थिनी ने अपने शोध अध्ययन में प्राथमिक स्तर के विद्यालयों के शिक्षक, शिक्षिका तथा शिक्षामित्रों की व्यावसायिक सतुष्टि का अध्ययन किया है। अपने शोध अध्ययन के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु शोधार्थिनी ने शिक्षक, शिक्षिका तथा शिक्षामित्रों की व्यावसायिक संतुष्टि के मापन के लिए डॉ0 मीरा दीक्षित द्वारा निर्मित Job Satisfaction Scale का प्रयोग किया है।

प्रयुक्त सांख्यिकीय विधियाँ

प्रस्तुत शोध अध्ययन में सांख्यिकीय विश्लेषण के लिए मध्यमान, मानक विचलन, मानक त्रुटि एवं टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

शोध परिकल्पना परीक्षण

H_{01}

''प्राथमिक स्तर पर कार्यरत् शिक्षक एवं शिक्षामित्रों की व्यावसायिक संतुष्टि के मध्यमानों के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।''

समूह	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	मध्यमान का अन्तर (D)	मानकत्रुटि (SE_D)	टी–अनुपात (t)	सार्थकता स्तर
महिला एवं पुरूष शिक्षक	200	200.85	25.79	13.45	2.57	5.23	0.05=1.97 सार्थक
शिक्षामित्र	100	187.40	18.17				0.01=2.59 सार्थक

उपर्युक्त सारणी के अवलोकन से ज्ञात होता है कि शिक्षक एवं शिक्षामित्रों की व्यावसायिक संतुष्टि के मध्यमान क्रमशः 200.85 तथा 187.40 और मानक विचलन क्रमशः 25.79 तथा 18.17 पाए गए जो उनके मध्य व्यावसायिक संतुष्टि के अन्तर को अवलोकित करते हैं। प्राप्त सांख्यिकीय विश्लेषण में टी–अनुपात का मान 5.23 प्राप्त हुआ जो कि df = 298 के द्विपुच्छीय सार्थकता परीक्षण के 0.05 स्तर और 0.01 स्तर के न्यूनतम सार्थक सारणीमान क्रमशः 1.97 एवं 2.59 से अधिक है। अतः टी–अनुपात का मान दोनों स्तरों पर सार्थक है। परिणामतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है और वैकल्पिक परिकल्पना स्वीकृत होती है अर्थात् प्रतिदर्शों के मध्यमानों के मध्य अन्तर पाया जाता है।

H_{02}

''प्राथमिक स्तर पर कार्यरत् महिला शिक्षक एवं शिक्षामित्रों की व्यावसायिक संतुष्टि के मध्यमानों के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।''

समूह	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	मध्यमान का अन्तर (D)	मानकत्रुटि (SE_D)	टी–अनुपात (t)	सार्थकता स्तर
महिला शिक्षक	100	200.40	25.31	13	3.11	4.18	0.05=1.97 सार्थक
शिक्षामित्र	100	187.40	18.17				0.01=2.60 सार्थक

उपर्युक्त सारणी के अवलोकन से ज्ञात होता है कि महिला शिक्षक एवं शिक्षामित्रों की व्यावसायिक संतुष्टि के मध्यमान क्रमशः 200.40 तथा 187.40 और मानक विचलन क्रमशः 25.31 तथा 18.17 पाए गए जो कि उनके मध्य व्यावसायिक संतुष्टि के अन्तर को अवलोकित करते हैं। प्राप्त सांख्यिकीय विश्लेषण में टी–अनुपात का मान 4.18 प्राप्त हुआ जो कि df=198 के द्विपुच्छीय सार्थकता परीक्षण के 0.05 स्तर और 0.01 स्तर के न्यूनतम सार्थक सारणीमान क्रमशः 1.97 एवं 2.60 से अधिक है। अतः टी–अनुपात का मान दोनों स्तरों पर सार्थक है। परिणामतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है और वैकल्पिक परिकल्पना स्वीकृत होती है अर्थात् प्रतिदर्शों के मध्यमानों के मध्य अन्तर पाया जाता है।

H_{03}

''प्राथमिक स्तर पर कार्यरत् पुरूष शिक्षक एवं शिक्षामित्रों की व्यावसायिक संतुष्टि के मध्यमानों के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।''

समूह	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	मध्यमान का अन्तर (D)	मानकत्रुटि (SE_D)	टी–अनुपात (t)	सार्थकता स्तर
पुरूष शिक्षक	100	201.30	26.27	13.9	3.19	4.36	0.05=1.97 सार्थक
शिक्षामित्र	100	187.40	18.17				0.01=2.60 सार्थक

उपर्युक्त सारणी के अवलोकन से ज्ञात होता है कि पुरूष शिक्षक एवं शिक्षामित्रों की व्यावसायिक संतुष्टि के मध्यमान क्रमशः 201.30 तथा 187.40 और मानक विचलन क्रमशः 26.27 तथा 18.17 पाए गए जो उनके मध्य व्यावसायिक संतुष्टि के अन्तर को अवलोकित करते हैं। प्राप्त सांख्यिकीय विश्लेषण में टी–अनुपात का मान 4.36 प्राप्त हुआ जो कि df=198 के द्विपुच्छीय सार्थकता परीक्षण के 0.05 स्तर और 0.01 स्तर के न्यूनतम सार्थक सारणीमान क्रमशः 1.97 एवं 2.60 मान से अधिक है। अतः टी–अनुपात का मान दोनों स्तरों पर सार्थक है। परिणामतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है और वैकल्पिक परिकल्पना स्वीकृत होती है अर्थात् प्रतिदर्शों के मध्यमानों के मध्य अन्तर पाया जाता है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध अध्ययन में निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए–

1. प्रस्तुत शोध अध्ययन के निष्कर्ष में शोधार्थिनी ने यह पाया कि प्राथमिक स्तर पर कार्यरत् शिक्षक एवं

शिक्षामित्रों की व्यावसायिक संतुष्टि अलग–अलग है अर्थात् शिक्षक एवं शिक्षामित्र दोनों की व्यावसायिक संतुष्टि का स्तर अलग–अलग है। एक तरफ शिक्षक यदि अपने शिक्षण व्यवसाय के प्रति संतुष्टि का अनुभव करते हैं तो वहीं दूसरी ओर शिक्षामित्र शिक्षकों के समान वेतन न मिलने के कारण व्यावसायिक असंतोष को दर्शाते हैं।

2. प्रस्तुत शोध अध्ययन के निष्कर्ष में शोधार्थिनी ने यह भी पाया कि शिक्षक व्यवसाय के प्रति महिला शिक्षक एवं शिक्षामित्रों की व्यावसायिक संतुष्टि भी असमान पायी गयी अर्थात् दोनों की संतुष्टि के अन्तर में असमानता दृष्टव्य है।
3. प्रस्तुत शोध अध्ययन के निष्कर्ष में शोधार्थिनी ने यह भी पाया कि प्राथमिक स्तर पर कार्यरत् पुरूष शिक्षक एवं शिक्षामित्रों की व्यावसायिक संतुष्टि असमान है उनके संतुष्टि के स्तर एक दूसरे से अलग हैं।

निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि पुरूष शिक्षक एवं शिक्षामित्रों की व्यावसायिक संतुष्टि के मध्य अन्तर दृष्टव्य है यदि उनके मध्य कोई समानता है तो यह सांख्यिकीय गणना, न्यादर्श चुनाव या किसी अन्य विवेचनीय कारण से हो सकती है।

शैक्षिक निहितार्थ

1. प्रस्तुत शोध अध्ययन के शैक्षिक निहितार्थ में शोधार्थिनी ने पाया कि शिक्षक एवं शिक्षामित्रों की व्यावसायिक संतुष्टि के पीछे उनके वेतन की असमानता है क्योंकि दोनों वर्ग के सहकर्मी लगभग समान जिम्मेदारियों का निर्वहन एवं शिक्षण कार्य सरकार द्वारा निर्धारित समय एवं विषयों के आधार पर करते हैं। परन्तु वेतन की असमानता उनके व्यावसायिक असन्तोष को दर्शाती है। यदि इसी असमानता को दूर किया जाए अथवा इस स्तर पर उन्हीं शिक्षामित्रों को नियुक्त किया जाए जो सहायक शिक्षक की योग्यता को पूर्ण करते हैं तो इस असमानता को दूर करते हुए व्यावसायिक संतुष्टि में सकारात्मक परिवर्तन लाया जा सकता है।
2. प्रस्तुत शोध अध्ययन के शैक्षिक निहितार्थ में शोधार्थिनी ने यह भी पाया कि सरकार द्वारा शिक्षक एवं शिक्षामित्रों को ऐसे कार्यों में भी नियुक्त कर दिया जाता है जैसे पोलियो बूथ, जनगणना, मतदाता सूची आदि। इन कार्यक्रमों में शिक्षक एवं शिक्षामित्रों को शिक्षण के अतिरिक्त कार्य के रूप में जोड़ने से अन्दर अपने कार्य के प्रति निष्ठा व जिम्मेदारी प्रभावित होती है और यह क्रम धीरे–धीरे उन्हें शिक्षण से विमुख करने लगता है। परिणामतः शिक्षकों में व्यावसायिक संतुष्टि घटती जाती है। सरकार को चाहिए कि शिक्षक एवं शिक्षामित्रों से ऐसे कार्य न कराएं अथवा ऐसे कार्यों से उन्हें न जोड़ा जाए जिससे प्राथमिक स्तर की शिक्षा प्रभावित हो। शिक्षा की गुणवत्ता को बनाए रखने के लिए सभी को इन कार्यों से दूर रखा जाए।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *गुप्ता, एस0पी0 एवं गुप्ता, अलका (2012) : आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।*
2. *गुप्ता, एस0पी0 (2013) : अनुसंधान संदर्शिका, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।*
3. *कपिल, एच0के0 (2004) : अनुसंधान विधियाँ, भार्गव भवन, आगरा।*
4. *लाल, रमन बिहारी एवं पलोड, सुनीता (2013) : शिक्षा मनोविज्ञान, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।*
5. *मदान, पूनम (2017) : भारत में शिक्षा व्यवस्था का विकास, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा।*
6. *पाण्डा, अनिल कुमार (2018) : अनुसंधान विधियाँ एवं सामाजिक विज्ञानों में सांख्यिकी, साहित्य रत्नालय, कानपुर।*
7. *पाण्डेय, के0पी0 (2005) : शैक्षिक अनुसंधान, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।*
8. *पाठक, पी0डी0 (2016) : शिक्षा के मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।*
9. *राय, पारसनाथ एवं राय, सी0पी0 (2011 पुनः मुद्रण) : अनुसंधान परिचय, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल प्रकाशन, आगरा।*
10. *सारस्वत, मालती एवं सिंह, मधुरिमा (2013) : शिक्षा मनोविज्ञान की रूपरेखा, आलोक प्रकाशन, लखनऊ।*
11. *सिंह, अरूण कुमार (2006) : उच्चतर सामान्य मनोविज्ञान, मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन, पटना।*
12. *सिंह, कर्ण (2018) : भारत में शिक्षा प्रणाली का विकास एवं इसकी चुनौतियाँ, गोविन्द प्रकाशन, लखीमपुर खीरी।*
13. *सुलेमान, मोहम्मद (2002) : उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन दिल्ली।*
14. *शर्मा, आर0ए0 (2005) : शिक्षा अनुसंधान, सूर्या पब्लिकेशन्स, मेरठ।*
15. *उपाध्याय, राधाबल्लभ (2018) : शैक्षिक निर्देशन एवं परामर्श, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा।*